पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता – मॉड्यूल सात – बुद्धिमानों के लिए प्रकाशन भाग 1

विचार-विमर्श के प्रश्न

1. आपको इस अध्याय में क्या सबसे अच्छा लगा, या आपने क्या सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी? आपके मन में क्या प्रश्न थे?
2. क्या प्राकृतिक आपदाएँ, गरीबी, युद्ध, बीमारी और ऐसी ही अन्य विपत्तियाँ हमेशा परमेश्‍वर के दंड को ही दर्शाती हैं? अपने उत्तर को स्पष्ट करें। इन परिस्थितियों में कलीसिया को कैसे प्रत्युत्तर देना चाहिए?
3. जब यीशु ने इस्राएल के धार्मिक अगुवों को यह कहते हुए डांटा, “मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूँ” (मत्ती 9:13), तो उसका अर्थ था कि उसे उनकी कपटपूर्ण आराधना से घृणा थी। हम अपने हृदय को कपटपूर्ण आराधना की ओर जाने से कैसे बचा सकते हैं?
4. इस्राएल और यहूदा के पाप के बावजूद परमेश्वर ने कैसे उन पर अनुग्रह और दया दिखाई? हम इससे क्या सीख सकते हैं?
5. क्या आपको कभी किसी ऐसे व्यक्ति से प्रेम करने की चुनौती दी गई है जिसे आप बहुत अनैतिक मानते थे, जैसे कि गोमेर? आपकी क्या प्रतिक्रिया रही? क्या आपने उस व्यक्ति से प्रेम करना सीखा? यदि हाँ, तो किस बात ने आपकी सहायता की?
6. क्या आपको कभी किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति दूसरी बार प्रेम दर्शाने की चुनौती दी गई है जिसे आपने बहुत अनैतिक समझा हो, और जब आपने प्रेम दर्शाया तो वह गोमेर के समान अपनी अनैतिक जीवनशैली की ओर लौट गया हो? आपकी क्या प्रतिक्रिया रही? क्या आपने उस व्यक्ति से फिर से प्रेम करना सीखा? यदि हाँ, तो किस बात ने आपकी सहायता की?
7. यह जानने से कि मसीही कलीसिया पुराने नियम के परमेश्वर के लोगों से निकली है, आपके पुराने नियम को पढ़ने के तरीके में क्या बदलाव आया है?
8. क्या आप अपने जीवन में ऐसे समय के बारे में सोच सकते हैं जब आपने दंड और आशीष दोनों को एक ही अनुभव में एक साथ देखा हो?

**समीक्षा कथन :** इस्राएल कपटपूर्ण आराधना में लिप्त था।

**विषय का अध्ययन 1 :** हनन्याह और सफीरा ने देखा कि बरनबास अपनी संपत्ति बेचने और उसका पैसा गरीबों में बाँटने के लिए कलीसिया को देने के द्वारा प्रसिद्ध हो गया था। वे भी प्रसिद्ध होना चाहते थे, लेकिन वे अधिक पैसा नहीं देना चाहते थे। इसलिए उन्होंने कलीसिया से कुछ ऐसा कहा, “हमने यह संपत्ति 20 लाख रुपयों में बेची है, और हम यह पूरी राशि आराधना के कार्य के रूप में कलीसिया को दे रहे हैं।” सच्चाई यह थी कि उन्होंने इसे 40 लाख रुपयों में बेचा था। लेकिन वे असलियत से अधिक त्यागपूर्ण होने का प्रभाव डालना चाहते थे।

**विषय का अध्ययन 2 :** रामोन कलीसिया का एक अगुवा था जो अक्सर पाप के अंगीकरण की प्रार्थना में कलीसिया की अगुवाई करता था। वह पश्चाताप के बारे में लगातार बात करता रहता था। कलीसिया की प्रार्थना सभाओं में वह पश्चाताप के बारे में भी बहुत प्रार्थना करता था। लेकिन उसकी पत्नी को उसके जीवन में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई नहीं दिया, यद्यपि वे दोनों जानते थे कि उसे कुछ महत्वपूर्ण बदलाव करने की जरूरत है।

**विषय का अध्ययन 3 :** हेलेना कलीसिया के गायन समूह में गाती थी और अक्सर एकल गायन भी करती थी। वह गीत गाने में बहुत अच्छी थी और उसके चेहरे पर एक विशेष भाव होता था, जिससे ऐसा लगता था कि वह गीतों के हर शब्द को महत्व देती है तथा वह बहुत आत्मिक है। एक बार क्लैरा नामक युवती ने कलीसिया में एक गीत गाया। हेलेना ने बाद में उससे बात की और उसे बताया कि उसे अपना चेहरा कैसे रखना है और कैसे भावों का प्रयोग करना है ताकि लोगों पर अधिक प्रभाव डाला जा सके। हेलेना ने एक महीने तक सप्ताह में एक बार क्लैरा से मुलाकात की और उसे सिखाया कि चेहरे के प्रभावशाली भाव कैसे बनाए जाते हैं।

**विषय का अध्ययन 4 :**  अल्फोंसो एक बहुत अच्छा प्रचारक था। वह ऐसे प्रचार करता था कि लोग असहज हो जाते थे, क्योंकि वह पाप और उससे दूर रहने के बारे में बहुत स्पष्ट और बलपूर्वक बात करता था। लेकिन अपने व्यक्तिगत जीवन में वह बहुत लापरवाह था।

**विषय का अध्ययन 5 :** फरीसी अपने कपटी होने के लिए जाने जाते थे। उदाहरण के लिए, वे सड़कों पर प्रार्थना करते थे ताकि लोग उन्हें देखें और उनकी गहरी आत्मिकता के लिए उनकी प्रशंसा करें।

मनन के प्रश्न :

1. क्या आप ऐसे लोगों को जानते हैं जो आराधना करने का दिखावा तो करते हैं लेकिन कम से कम कुछ रूपों में कपटी हैं? उदाहरण दीजिए।
2. क्या आप कभी अपनी आराधना में कपटपूर्ण रहे हैं? उदाहरण दीजिए।
3. आप यह सुनिश्चित करने के लिए क्या कदम उठाते हैं कि आपकी आराधना कपटपूर्ण नहीं बल्कि सच्ची है?
4. क्या आपकी संस्कृति में कलीसियाओं में ऐसी रीतियाँ हैं जो आपके विचार में कपटपूर्ण हो सकती हैं? उदाहरण दीजिए।

दिए जानेवाले कार्य :

* प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपके जीवन में कपटपूर्ण आराधना को प्रकट करे। आवश्यकतानुसार पश्चाताप करें और हृदय से प्रभु की आराधना करें, न कि दूसरों के सामने अपनी छवि प्रस्तुत करने के लिए या स्वयं को अच्छा महसूस कराने के लिए।
* अपने पास्टर से पूछें कि वह लोगों को कपटपूर्ण आराधना से दूर रहने और सच्ची आराधना में बने रहने में कैसे मदद करता है। उसके उत्तरों को लिखें और अपनी संस्कृति की कलीसियाओं में सच्ची आराधना को कैसे बढ़ावा दिया जाए, इस पर विचारों को प्रकट करते हुए एक पृष्ठ का निबंध लिखें।